P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

ग्रामीण जनांकिकीय संरचना का वर्तमान स्वरूप, जिला – मुरैना (म0प्र0)

प्रियंका यादव
शोध छात्रा,
भूगोल विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय,
अम्बाह, मुरैना, मध्यप्रदेश
भारत

शिवराज सिंह तोमर
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग,
अम्बाह स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय,
अम्बाह, मुरैना, मध्यप्रदेश,
भारत

सारांश

मानव ने प्राकृतिक परिस्थितियों से समन्वय कर अपने सांस्कृतिक स्वरूप को स्पष्ट किया है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण वातावरण क्षेत्रीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक घटकों का प्रतिफल है। अध्ययन क्षेत्र में 1524803 कुल ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है जो जिले की कुल जनसंख्या का 71.44% है। मुरैना जिले के अन्तर्गत 830425 पुरूष, 694378 महिला ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है जो कुल ग्रामीण जनसंख्या क्रमशः 54.46% एवं जिले की कुल पुरूष जनसंख्या का 71.1% है एवं जो जिले ग्रामीण जनसंख्या का 45.54% एवं जिले की कुल महिला जनसंख्या का 71.2% आंकलित की गयी है। यहाँ ग्रामीण जनघनत्व 325 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में 2011–15 के काल में 1.96% दर्ज की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या में लिंगानुपात 837 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष पाया जाता है। मुरैना जिले के अन्तर्गत ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या 335733 व्यक्ति आंकलित की गयी है जो जिले की कुल ग्रामीण जनसंख्या का 22.02% एवं जिले के कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या का 73.87% आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत 17416 अनुसूचित जनजाति ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है। जो जिले की कुल जनसंख्या का 1.14% एवं जिले की कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का 84.13% आंकलित की गयी है।

मुख्य शब्द : जनांकिकीय संरचना, प्राकृतिक संसाधन, सांस्कृतिक संसाधन, अध्ययन क्षेत्र, व्यावसायिक स्वरुप, क्षेत्रीय स्वरुप, वृद्धि दर, लिंगानुपात, जनगणना, अधोसंरचना, वातावरण, जनसंख्या।

प्रस्तावना

मानव प्रकृति का एक महत्वाकांक्षी जिज्ञासापूर्ण, विवेकी एंव कार्यशील प्राणी है। इसी कारण मानव को प्रकृति के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है। मानव ने प्राकृतिक परिस्थितियों में समन्वय कर अपने सांस्कृतिक स्वरूप को स्पष्ट किया है। क्षेत्रीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक भौगोलिक परिस्थितियाँ विविधतापूर्ण पायी जाती है जिसके फलस्वरूप क्षेत्र विशेष में जनसंख्या एवं जनांकिकीय विविधताएँ भिन्न–भिन्न सुनिश्चित होती हैं। क्षेत्र विशेष में मानव की उपस्थिति संसाधनों की अवस्थिति के आधार पर पायी जाती है। मानव भी एक संसाधन है। शिक्षा मनुष्य को संसाधनवान बनाती है और जीवन के उच्च शिखर की ओर प्रवृत्त करती है। इस प्रकार शिक्षा मानव को मानवीयता प्रदान करती है।

मानव भौतिक वातावरण का विशिष्ट अंग है और सांस्कृतिक भूदृश्य उसकी अनुपम कृति है। मानव सांस्कृतिक वातावरण का जन्मदाता, पोषक एवं संरक्षक है। मनुष्य प्राकृतिक घटकों के साथ सहसम्बन्ध स्थापित कर सांस्कृतिक तथ्यों को प्रकट करता है और अपने विकास और अभिलाषा शान्ति की प्रक्रिया में सांस्कृतिक भूदृश्यावली में सुधार एवं परिष्करण करता है इसके साथ ही भौगोलिक अभिक्रिया के उचित समायोजन एवं संरक्षण हेतु सामाजिक न्याय, रीतिरिवाज व परम्पराओं तथा व्यवस्थाओं को प्रतिपादित करता है। इस प्रकार मानव प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का केन्द्र बिन्दु है। अतः मानव जनसंख्या एवं जनांकिकीय संरचना के विविध घटक क्षेत्रीय विकास के आधार पर सुनिश्चित होते हैं। शिक्षा जनांकिकीय संरचना का प्रमुख अंग होते हुए, जनांकिकीय संरचना के विविध घटकों के विकास को प्रभावित करता है। शिक्षा मानव के बौद्धिक, आध्यात्मिक, ज्ञानात्मक, रचनात्मक व सृजनात्मक विकास की सतत् प्रक्रिया है। साक्षरता जनसंख्या के मूल घटक मानव को संसाधन स्वरूप प्रदान करने एवं मानव को मानवीय गुणों की पराकष्ठा तक ले जाने और सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सभ्यता को उचित दिशा की ओर ले जाने में प्रमुख भूमिका रखती है।

मानव के उज्जवल भविष्य, अभ्युत्थान का मार्ग एवं दिशा सुनिश्चित कर उसे उत्कृष्ठता एवं परिपक्वता के शिखर पर पहुँचाती है, जिसका प्रभाव जनांकिकीय संरचना के विविध पहलुओं के सन्तुलन एवं विकास में सहायक होता है।

जनांकिकीय सरंचना के विविध घटकों के समन्वय एवं सन्तुलन की स्थिति क्षेत्रीय विशिष्ठताओं, विकास एवं मानवीय कौशल व उसके ज्ञान (शैक्षिक स्तर) द्वारा प्रभावित एवं सुनिश्चित होती है। प्रकृति प्रदत्त सुविधाओं को मानव एवं शिक्षा संसाधन सम्पन्न बनाती है। किसी राष्ट्र क्षेत्र विशेष का वास्तविक विकास उसकी जनसंख्या के विविध घटकों एवं उसके स्वस्थ साक्षर, खुशहाल पुरूष, स्त्री एवं बच्चों में निहित है। प्रकृति प्रदत्त साधन निष्क्रिय होते हैं, जो आर्थिक विकास की सुविधाएँ प्रदान करते हैं। और मानव अपने ज्ञान एवं क्रिया द्वारा उन्हें संसाधन के रूप में ढालता है। शिक्षा जनांकिकीय संरचना का प्रमुख घटक होते हुए, उसके सन्तुलित एवं समन्वित विकास में सहायक होता है।

जनांकिकीय संरचना के विविध पहलुओं को साक्षर जनसंख्या अत्यधिक प्रभावित करती है। इनमें जनसंख्या के वितरण, वृद्धि आयु, लिंग, जन्म, मृत्यु दर, आवास प्रवास, व्यावसायिक स्वरूप, सामाजिक उत्थान, नैतिक एवं आध्यात्मिक और तर्कशक्ति पर देखा जा सकता है। जनांकिकीय संरचना के विविध घटकों की वस्तुस्थिति का ज्ञान क्षेत्रीय विकास एवं सन्तुलन और नियंत्रण तथा शैक्षणिक व्यवस्थाओं के नियोजन की दृष्टि से आवश्यक है। देश, प्रदेश एवं जिले की अधिकांश समस्या जनसंख्या व साक्षरता से सम्बन्धित समस्याएँ व्याप्त है। इस भौतिक वादी सायवर युग ने जनसंख्या के एक बहुत बड़े भाग को विविध समस्याओं में उलझा दिया है।

अध्ययन क्षेत्र में जनांकिकीय घटकों की आपसी असमानता, विसंगतियाँ आंकलित की गयी है, अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या वितरण स्वरूप में भिन्नता, जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, लिंगानुपातीय भिन्नता, अनुसूचित जाति एवं जनजातीय वितरण की भिन्नता विविधता एवं विसंगतियाँ आंकलित की गयी है। जनांकिकीय घटकों के मध्य आपसी सामंजस्य एवं संतुलन स्थापित करने एवं क्षेत्रीय विकास के मार्ग में आनेवाली बाधाओं को चिन्हित कर उनके समाधान की दृष्टि से ऐसे अध्ययनों की विशेष आवश्यकता है।

अध्ययन क्षेत्र में देश, प्रदेश की ही भाँति जनसंख्या सन्तुलन एवं नियंत्रण और साक्षरता स्तर सुधार हेतु शासकीय एवं सामाजिक स्तर पर कई योजनाएँ संचालित की गयीं, लेकिन क्षेत्र में उनका प्रभाव केवल शहरी, विकसित, शिक्षित समाज व समुदाय पर ही दिखाई देता है, जो सामाजिक न्याय की दृष्टि से सही नहीं ठहराया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र में विशेषत: पिछडे एवं दूरस्थ पिछड़े भागों में जनांकिकीय स्वरूप में विकृतियाँ आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में अनवरत बढ़ती जनसंख्या, घटता लिंगानुपात, बढ़ती जन्मदर एवं घटती मृत्यु दर, भ्रूण परीक्षण, भ्रूणहत्या, महिला उत्पीड़न, पारिवारिक हिंसा तथा निरक्षरता ऐसी समस्याएँ व्याप्त हैं, वर्तमान में जनांकिकीय एवं साक्षरता के तथ्यों एवं घटकों के समन्वय, संतुलन एवं विकास में आनेवाली कठिनाईयों, बाधाओं, समस्याओं को स्पष्ट कर उनके निवारण की नितान्त आवश्यकता है। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए शोधार्थिनी ने अपने शोध पत्र का विषय ग्रामीण जनांकिकीय संरचना का वर्तमान स्वरूप जिला मुरैना चयनित किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

शोध अध्ययन का मूल उद्देश्य मुरैना जिले की वर्तमान जनांकिकीय संरचना स्वरूप का सांगोपांग अध्ययन प्रस्तुत करना है। जनांकिकीय संरचना की वर्तमान ग्रामीण स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

मुरैना जिला भारत वर्ष के मध्य प्रदेश प्रान्त के उत्तर में मुकुट की भाँति दिखाई देता है। यह क्षेत्र प्राचीनकाल से मयूरवन के नाम से जाना जाता है। यहाँ मोर पक्षी बहुतायत से पाये जाते हैं जिसके कारण इस क्षेत्र का नाम "मोर है ना" पडा जो कालान्तर में मोरेना/मुरैना के रूप में परिणित हो गया। जिले का ज्यामितीय विस्तार 25^0 50′ से 26^0 52′ उत्तरी अक्षास एवं 77^0 10′ से 78^0 42′ पूर्वी देशान्तर के मध्य पाया जाता है। जिले की उत्तरी सीमा चम्बल नदी एवं दक्षिणी पूर्वी सीमा आसन क्वारी नदियाँ निर्धारित करती है। चम्बल नदी जिले को राजस्थान व उत्तर प्रदेश प्रान्तों से विलग करती हैं। अध्ययन क्षेत्र के उत्तर में करौली, धौलपुर (राजस्थान) एवं आगरा (उत्तर प्रदेश),दक्षिण में ग्वालियर, पूर्व में भिण्ड पश्चिम में श्योपुर एवं दक्षिण परिश्चम में श्योपुर व शिवपुरी जिले पाये जाते हैं।

मुरैना जिले का विस्तार 5016.86 वर्ग कि.मी. (ग्रामीण पत्रकों के अनुसार) भू–भाग पर है। इसकी पूर्व पश्चिम अधिकत्तम लम्बाई 158 कि.मी. एंव न्यूनतम लम्बाई 3 कि.मी. (पहाडगढ़ के दक्षिण में) एंव इसकी उत्तर दक्षिण अधिकत्तम चौडाई 75 कि.मी. एवं न्यूनत्तम चौडाई 7 कि.मी. आंकलित की गयी है। वर्तमान में जिले के अन्तर्गत 7 तहसीलें (पोरसा, अम्बाह, मुरैना, बानमौर जौरा, कैलारस व सबलगढ़), 7 विकासखण्ड (पोरसा, अम्बाह, मुरैना, जौरा, पहाडगढ़, कैलारस व सबलगढ), 8 नगर (पोरसा, अम्बाह, मुरैना, बानमौर, जौरा, कैलारस, सबलगढ़, झुण्डपुरा) 766 ग्राम पाये जाते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2015 की सम्भावित जनसंख्या 2134257 व्यक्ति आंकलित की गयी है। जिनमें 1158475 पुरूष एवं 975782 महिलाएँ पायी जाती है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व 425 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी., लिंगानुपात, 842 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष पाया जाता है। जनसंख्या वृद्धि (2011–2015) चार वर्षीय 8.56% (2.14% वार्षिक) आंकलित की गयी है। जिले की साक्षरता 75.4% पायी जाती है। यहाँ कार्यशील जनसंख्या 33.57%, एवं जीवन प्रत्याशा 67 वर्ष आंकलित की गयी है। जिले के अन्तर्गत सड़क मार्गों का जाल विछा हुआ है, जो जिला मुख्यालय मुरैना नगर को विकासखण्ड मुख्यालयों एवं ग्राम व नगरों से जोड़ता है। मुरैना नगर राष्ट्रीय मार्ग क्र. 3 व उत्तर मध्य रेलवे लाइन से देश व प्रदेश के नगरों से जुडा हुआ है। जिले से होकर छोटी व

बड़ी रेल लाइन जाती हैं। मुरैना नगर अनाज की बड़ी मण्डी, शिक्षा, व्यावसायिक व्यापारिक व प्रशासनिक केन्द्र है।

मुरैना जिला पुरातात्विक दृष्टि से धनी है। यहाँ प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान समय तक के साक्ष्य व प्रतीक पाये जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र में लिखी छाज, गुहाएँ, ईश्वरा महादेव (पहाडगढ़) सिहोनिया का ककनमठ व जैन मंदिर, कुन्तलपुर (कोतवाल), पढावली की गढ़ी, बटेश्वरा के 400 मंन्दिर मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर बहरौली, ऐसाह का किला, मृगपुर व गौषपुरा की बाबडी व अन्नकूप, पिपरसा में तोमर व शेरशाह कालीन पुल एवं गढ़ी तथा कई ग्रामों में मिट्टी की गढ़ी आंकलित की गयी है, जो प्राचीनकाल के किले माने जा सकते है। जिले के अन्तर्गत सबलगढ़, पहाडगढ़ का किला जौरा की कचहरी, नूराबाद का नूरमहल व पुल, पन्ना बेगम का मकबरा, छौदा के निकट अंग्रेज अधिकारियों की समाधि तथा मुरैना नगर में पं. रामप्रसाद विस्मिल संग्रहालय व मंदिर पाये जाते हैं। इसके साथ ही यह जिला वीरों की भूमि मानी जाती है। यहाँ के वीर पुरूष प्रथम विश्व युद्ध से लेकर वर्तमान तक देश की सुरक्षा में अपनी उपस्थित एवं प्रभाव को प्रकट करते हैं।

साहित्यावलोकन

जनसंख्या शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसिस वेकन (1612) ने अपने अध्ययन में किया। जॉन ग्राण्ट (1662), हैली (1693), किंग ग्रिगोरी (1696) सममीलक (1741) माल्थस,टी.आर. (1798), कार सौन्डर्स अचले गुईलार्ड (1855) एवं कार्लमार्क्स (1929) ने अपने अध्ययनों में जनसंख्या एवं जनांकिकीय का विविध रूपों में अध्ययन प्रस्तुत किया। प्रो. ट्रिवार्था (1953), जैम्स (1954), जैलिसकी विद्वानों ने जनसंख्या भूगोल के स्वतंत्र शाखा के रूप में उपयोग कर, जनसंख्या के विविध घटकों एवं भौगोलिक घटकों कारकों की व्याख्या प्रस्तुत की गयी। गोषाल, जी.एस. (1956), कृष्णन, जी. (1968), चांन्दना आर.सी. (1969), मेहत्ता एस. (1970), ओमप्रकाश (1973), घोष सान्तवना (1973) दीनानाथ (1981), रामप्यारे (1982) प्रमुख है। इन्होंने अपने शोध – प्रबन्धों के माध्यम से जनसंख्या भूगोल के विविध घटकों पर अध्ययन प्रस्तुत किये। जनसंख्या एवं अधिवास भूगोल से सम्बन्धित कौशिक निर्भला (1969), सिंह, जगदीश (1979), पण्डा, बी. पी. (1988) एवं मौर्य, एस.डी. तथा मनीसरजा (1990) के अध्ययन महत्वपूर्ण माने जा सकते हैं। जनसंख्या भूगोल एंव जनांकिकी की विविध तथ्यों एवं समस्याओं पर क्षेत्रीय अध्ययन की दृष्टि से शैल, के.सि. (1978)[1] कनौजिया, ह. व. (1980)[2] शर्मा, आर.के.(1980)[3] कालगॉवकर, आर.एस. (1981)[4], शर्मा, आई.(1987)[5] गुप्ता, अंजू (1988)[6] शर्मा अशोक कुमार (1990)[7] सौनी एस. (1994)[8], श्रीवास्तव, अ.मो. (1997)[9] तोमर श्याम सुन्दर सिंह (1997)[10], उपाध्याय धनंजय (2000)[11] आजाद गीता(2007)[12] चौहान, कु. पूजा (2007)[13] वर्मा मूलचन्द्र(2010)[14] एवं पठार, बी.के. (2013)[15] के शोध अध्ययन उल्लेखनीय माने जा सकते हैं। उक्त अध्ययनों में जनसंख्या संरचना एवं जनांकिकीय के विविध घटकों पर ही अध्ययन किये गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र जनांकिकीय सरंचना के विविध घटकों को स्पष्ट करने की दृष्टि से उपयोगी माना जा सकता है।

शोध विधितंत्र

शोध विधि तंत्र एक अभिक्रिया एवं प्रक्रिया में जिसमें शोधार्थी समस्या चयन, परिकल्पना एवं धारणा, न्यादर्श चयन, समंक संकलन, सारणीयन, अनुसंधान विधि, विश्लेषण व विवरण प्रस्तुत करने के साथ–साथ निष्कर्ष निकालता है इसके साथ ही विषयवस्तु से सम्बन्धित समस्याओं को चिन्हाकित कर निदान हेतु सुझाव प्रस्तुत करता है इस प्रकार व उपचारात्मक अध्ययन करता है। शोध अध्ययन की सार्थकता की दृष्टि से सुस्पष्ट प्रभावी एवं क्षेत्रानुरूप शोध विधितंत्र का अपनाया जाना अत्यावश्यक है।

शोधार्थी द्वारा अपने अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। शोधकर्ती द्वारा प्राथमिक आंकड़े संकलित करने हेतु अध्ययन क्षेत्र में विषय से सम्बन्धित तथ्यों, घटकों एवं संरचना का अवलोकन, परीक्षण एवं सर्वेक्षण किया गया। अध्ययन क्षेत्र में जनांकिकीय संरचना के विविध घटकों एवं साक्षरता स्वरूप की वास्तविकता व्यक्त करने और जनांकिकीय के विविध पहलुओं पर साक्षरता के प्रभाव की विविधता को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन को गहन, सूक्ष्म स्तरीय वास्तविक एवं परीक्षणात्मक स्वरूप प्रदान करने के लिए जिले के 5% ग्रामों का चयन स्तरित यादृच्छिक प्रतिचयन विधि से किया गया है। ग्रामों से जनांकिकी एवं साक्षरता के अन्तर्सम्बन्ध से प्रभाव से सम्बन्धित विशिष्ट सूक्ष्म समंक एवं जानकारी के प्राथमिक समंक संकलित करने हेतु परिवार प्रश्नावली एवं ग्राम व क्षेत्र स्तरीय जानकारी हेतु अनुसूची व साक्षरता प्रश्नावली तैयार की गयी और उनका प्राथमिक परीक्षण कर उनमें आवश्यक प्रश्नों को जोड़ा गया तथा अनावश्यक तथ्यों को प्रश्नावली से हटा दिया गया और प्रश्नावली को अन्तिम स्वरूप प्रदान कर क्षेत्र से अध्ययन हेतु, पटवारी, ग्रामीणों, पंचायत सचिव, समाज सेवियों, शिक्षकों, आंगनवाडी कार्यकर्ता एवं स्वास्थ्यकर्मी एवं जनगणना विश्लेषकों के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े संकलित किये गये हैं।

संकलित संमको से परिणाम प्राप्त करने एवं निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए पर्यवेक्षणात्मक, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक एवं परिमाणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया है। संकलित समंकों, का विश्लेषण विविध सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से मानचित्र छायाचित्रों का प्रयोग कर अध्ययन को स्पष्ट, सरल एवं बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है, जिसके आधार पर अन्तिम निष्कर्षों तक पहुँचने का प्रयास किया गया है।

ग्रामीण जनांकिकीय संरचना का वर्तमान स्वरूप

जनांकिकीय संरचना व साक्षरता की वर्तमान स्थिति क्षेत्रीय सम्बृद्धता एवं उसके विकास की दशा व दिशा को स्पष्ट करती है। जनांकिकीय संरचना जनसंख्या के विविध घटकों के स्वरूप को प्रकट करती है, जबकि साक्षरता जनांकिकी का एक घटक हैं साक्षरता जनांकिकी का एक घटक होते हुए भी जनसंख्या के विविध घटकों के स्वरूप को प्रभावित करती है। मानवीय

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

क्रियाएँ जनांकिकीय घटकों के स्वरूप के आधार पर सुनिश्चित होती है। जनांकिकीय संरचना क्षेत्रीय सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप के निर्धारण में विशेष भूमिका रखती है इसका केन्द्र बिन्दु मानव है। साक्षरता धार्मिक सांस्कृतिक सामाजिक आध्यात्मिक, नैतिक और बौद्धिक के निर्धारण स्वरूप महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।

जनांकिकीय संरचना व साक्षरता की वर्तमान वस्तुस्थिति क्षेत्रीय संसाधन एवं अधोसंरचनात्मक सुविधाओं के विकास एवं नियोजन की रूपरेखा तैयार करने में विशेष भूमिका रखती है। अध्ययन क्षेत्र में जनांकिकीय संरचना एवं साक्षरता के स्वरूप में ग्रामीण एवं नगरीय स्तर पर घटकीय विविधता दिखायी देती है। अध्ययन क्षेत्र में दूरस्थ ग्रामीण अंचलों की अपेक्षा नगरीय जनांकिकीय संरचना की सघनता (एकत्रीकरण एवं प्रकीर्णन) वृद्धि, लिंगानुपात, साक्षरता, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति जनसंख्या, आयुवर्ग, व्यावसायिक एवं धार्मिक, स्वरूप में भिन्नता आंकलित की गयी है, जिसका प्रभाव मानव की जीवन शैली, व्यावसायिक क्रियाओं एवं सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक विकास व संतुष्टि पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। अतः यहाँ जनांकिकीय संरचना व साक्षरता के ग्रामीण एवं नगरीय वर्तमान स्वरूप का अध्ययन पृथक पृथक किया जाना क्षेत्रीय विकास की सम्भावनाओं एवं भावी नियोजन की दृष्टि से आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण वातावरण क्षेत्रीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक घटकों के समन्वय का प्रतिफल है। अध्ययन क्षेत्र में मौजूद प्राकृतिक व सांस्कृतिक वातावरण एवं मानवीय पहल ने ग्रामीण जनांकिकीय संरचना के विविध घटकों एवं साक्षरता स्वरूप को प्रभावित किया है। ग्रामीण जनांकिकीय संरचना एवं साक्षरता क्षेत्रीय स्थलाकृतिक बनावट, आर्थिक तंत्र, सामाजिक स्वरूप मृदा, जलवायुविक दशाओं, क्षेत्र विस्तार, भरण पोषण की स्थिति,संसाधन एवं अधोसंरचना विकास के अनुरूप पायी जाती है। अतः यहाँ जनांकिकीय संरचना एवं साक्षरता के वर्तमान ग्रामीण स्वरूप का अध्ययन क्षेत्रीय सर्वांगीण विकास की दृष्टि से आवश्यक है।

ग्रामीण जनसंख्या, घनत्व, वृद्धि दर एवं लिंगानुपात का वर्तमान स्वरूप

अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण, घनत्व, वृद्धिदर एवं लिंगानुपात क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुरूप पाया जाता है। मुरैना जिले के अन्तर्गत ग्रामीण पहाड़ी, पठारी व खड्डीय क्षेत्रों की अपेक्षा मैदानी क्षेत्रो में जनसंख्या सघन एवं लिंगानुपात अधिक व वृद्धि दर सामान्य आंकलित की गयी है, जो जनसंख्या पोषण, जीवन निर्वाह (वहनीय क्षमता) क्षेत्रीय संसाधन, अधोसरंचना विकास की परिस्थितियों को स्पष्ट करती है। जिले के अन्तर्गत इकाई स्तर पर ग्रामीण जनसंख्या संरचना के विविध घटकों का वर्तमान स्वरूप भिन्नता पूर्ण पाया जाता है जिसका विश्लेषण जनांकिकीय विलक्षणताओं को स्पष्ट करने की दृष्टि से आवश्यक है (सारणी 1 मानचित्र 1)।

सारणी 1

ग्रामीण जनसंख्या, घनत्व, वृद्धिदर एवं लिंगानुपात स्वरूप जिला मुरैना 2015

विकास खण्ड	जनसंख्या			घनत्व प्रति वर्ग कि.मी.	वृद्धि दर (चार वर्षीय)	लिंगानुपात प्रति हजार पुरूष
	कुल	पुरूष	महिला			
पोरसा	204731	108683	96048	381	6.92	884
अम्बाह	226985	121942	105043	445	7.32	861
मुरैना	288707	158946	129761	302	−19.7	816
जौरा	252259	137930	114329	385	8.27	829
पहाडगढ़	183546	102068	81478	223	11.16	798
कैलारस	181350	98898	82752	361	9.42	837
सबलगढ़	187225	102258	84967	278	10.75	831
जिला	1524803	830425	694378	325	1.96	837

स्रोत क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर (सम्भावित)

कुल ग्रामीण जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र में 1524803 कुल ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है जो जिले की कुल जनसंख्या का 71.44% है। मुरैना जिले में अधिक ग्रामीण जनसंख्या पहाडगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 100% निवास करती है इसके विपरीत यहाँ निम्नत्तम ग्रामीण जनसंख्या मुरैना विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 42.8% निवास करती है। मुरैना जिले के अन्तर्गत मध्यम ग्रामीण जनसंख्या अम्बाह, पोरसा जौरा एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 81.2, 82.7 84.4% एवं 86.7% आंकलित की गयी है। यहाँ निम्न ग्रामीण जनसंख्या सबलगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 77.6% आंकलित की गयी है।

ग्रामीण जनसंख्या घनत्व वृद्धि दर एवं लिंगानुपात, जिला मुरैना 2015

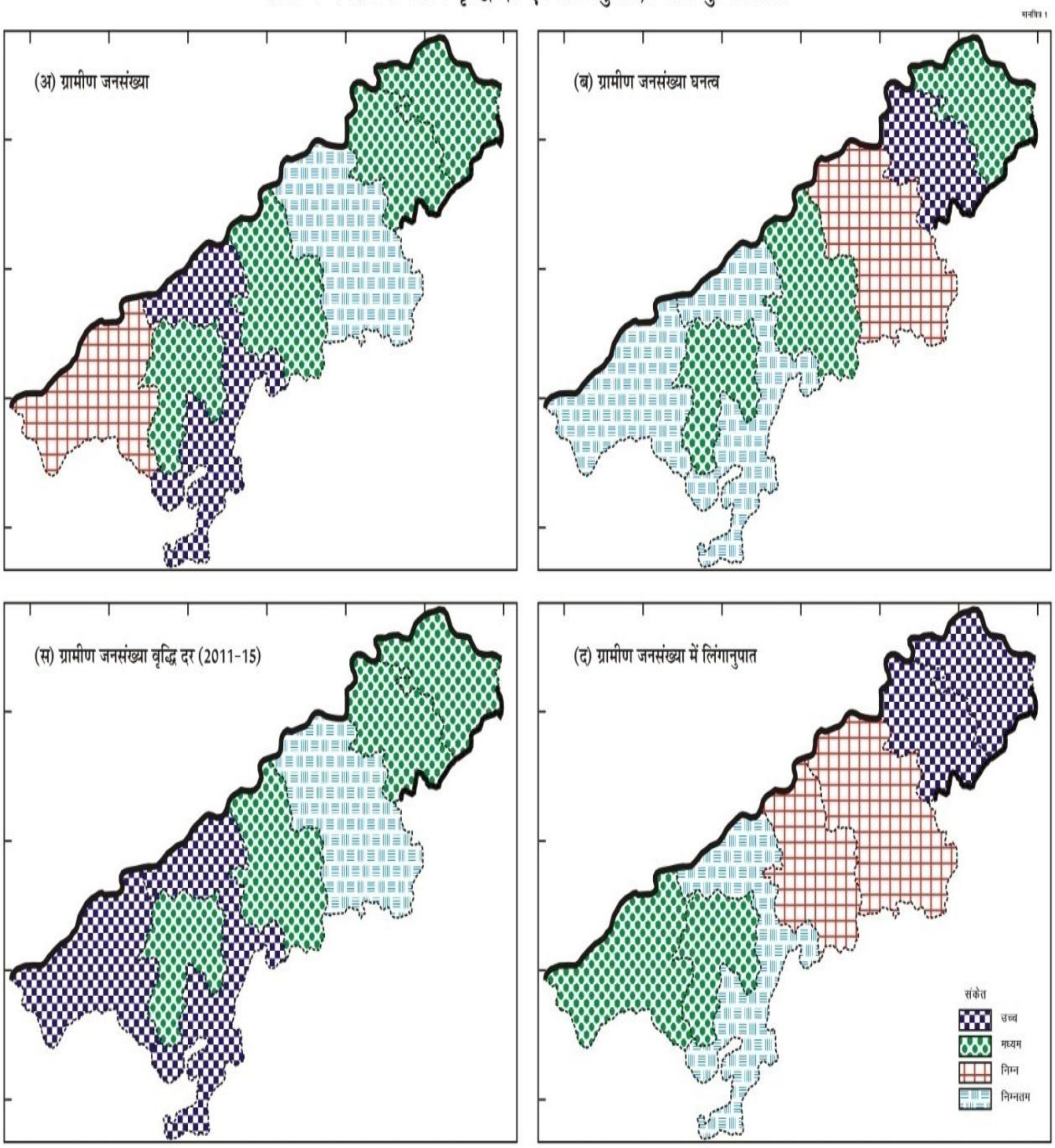

पुरूष ग्रामीण जनसंख्या

मुरैना जिले के अन्तर्गत 830425 पुरूष ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है जो कुल ग्रामीण जनसंख्या का 54.46% एवं जिले की कुल पुरूष जनसंख्या का 71.7% है। अध्ययन क्षेत्र में अधिक ग्रामीण पुरूष जनसंख्या पहाडगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 100% आंकलित की गयी है, इसके विपरीत यहाँ निम्नत्तम पुरूष ग्रामीण जनसंख्या मुरैना विकासखण्ड में इसकी कुल पुरूष जनसंख्या का 43.25% आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में मध्यम ग्रामीण पुरूष जनसंख्या, अम्बाह, पोरसा, जौरा एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल जनसंख्या का क्रमशः 81.35, 82.8, 84.64 एवं 86.9% आंकलित की गयी है। यहाँ निम्न ग्रामीण पुरूष जनसंख्या सबलगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 77.9% आंकलित की गयी है।

महिला ग्रामीण जनसंख्या

अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत 694378 महिलाएँ ग्रामों में निवास करती है जो जिले की कुल ग्रामीण जनसंख्या 45.54% एवं जिले की कुल महिला जनसंख्या का 71.2% आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक ग्रामीण महिला जनसंख्या पहाडगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल महिला जनसंख्या का 100% आंकलित की गयी है। इसके विपरीत जिले में निम्नत्तम महिला ग्रामीण जनसंख्या मुरैना विकासखण्ड में इसकी कुल महिला जनसंख्या का 42.3% आंकलित की गयी है। यहाँ मध्यम महिला ग्रामीण जनसंख्या अम्बाह, पोरसा, जौरा एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल महिला जनसंख्या का 81, 82.6, 84.2,एवं 86.5% आंकलित की गयी है। यहाँ निम्न ग्रामीण महिला जनसंख्या सबलगढ़

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

विकासखण्ड में इसकी कुल जनसंख्या का 77.3% आंकलित की गयी है।

ग्रामीण जनसंख्या घनत्व

ग्रामीण जनसंख्या क्षेत्रीय जनसंख्या की ग्रामीण जनसंख्या के बसाव प्रतिरूप एवं उसके वितरण स्वरूप की विविधता को स्पष्ट करती है जो क्षेत्रीय संसाधनों की उपलब्धता एवं वहनीय क्षमता को स्पष्ट करती है। जिले के 790 ग्रामों के 4688.3 वर्ग कि.मी. (ग्रामीण पत्रकों के अनुसार) क्षेत्रफल में 152483 व्यक्ति निवास करते हैं। इस प्रकार यहाँ ग्रामीण जनघनत्व 325 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. अंकित किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत अधिक ग्रामीण जनसंख्या घनत्व अम्बाह विकासखण्ड में 445 व्यक्ति प्रति कि.मी. पाया जाता है। इसके विपरीत जिले में निम्नत्तम ग्रामीण जनसंख्या घनत्व पहाडगढ़ एवं सबलगढ़ विकासखण्डों में क्रमशः 223 एवं 278 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत मध्यम ग्रामीण जनसंख्या घनत्व कैलारस, जौरा एवं पोरसा विकासखण्डों में क्रमशः 361, 381 एवं 385 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. पाया जाता है। यहाँ निम्न ग्रामीण जनसंख्या घनत्व मुरैना विकास खण्ड में क्रमशः 302 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. पाया जाता है (मानचित्र 1ब) जो क्षेत्रीय धरातलीय विविधता, संसाधनों की उपलब्धता एवं उपस्थिति का परिणाम है।

ग्रामीण जनसंख्या में कालिक (2011 से 2015) वृद्धि दर

दशकीय वृद्धि दर जनसंख्या के बढ़ते प्रतिशत दर को अभिव्यक्त करती है, जिसके आधार पर विकास की भावी सम्भावनाओं के नियोजन की कार्ययोजना तैयार कर संसाधन जुटाने में सहायता मिलती है। अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2011 में ग्रामीण जनसंख्या 1495508 व्यक्ति थी जो 0.5% वार्षिक दर से बढ़कर 1524803 व्यक्ति दर्ज की गयी है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में 2011–2015 के काल में 1.96% दर्ज की गयी है। इसका प्रमुख कारण ग्रामीण क्षेत्र का नगरीय क्षेत्र में विलय किया जाना है। इसमें क्षेत्रीय स्तर विविधता पायी जाती है। जो क्षेत्रीय परिस्थितियों का परिणाम है (सारणी 1 प्लेट 1 स)।

सारणी 1 एवं मानचित्र 1 स से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या में अधिक कालिक वृद्धि सबलगढ़ एवं पहाड़गढ़ विकासखण्डों में क्रमशः 10. 75 एवं 11.16% पायी जाती है। इसके विपरीत जिले के अन्तर्गत निम्नत्तम कालिक वृद्धि मुरैना विकासखण्ड में 19.7% दर्ज की गयी है। कमी का प्रमुख कारण मुरैना नगर में आसपास के ग्रामों का सम्मिलित किया जाना है। अध्ययन क्षेत्र में मध्यम कालिक ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि जौरा एवं कैलारस विकासखण्डों में क्रमशः 8.27 एवं 9.4% पायी जाती है। यहाँ ग्रामीण जनसंख्या में निम्न दाशमिक वृद्धि पोरसा एवं अम्बाह में विकासखण्डों में क्रमशः 6.92 एवं 7.32% आंकलित की गयी है।

ग्रामीण जनसंख्या में लिंगानुपात

जनसंख्या में लिंगानुपात का अपना एक विशेष महत्व है। क्षेत्रीय भौगोलिक परिस्थितियाँ, परम्पराएँ, रूढियाँ एवं अन्धविश्वास और मानवीय विचारधारा लिंगानुपात को प्रभावित करती है। विकसित एवं अधिक साक्षर ग्रामों की अपेक्षा दूरस्थ पिछडे एवं न्यून साक्षरता वाले ग्रामों में लिंगानुपात कम पाया जाता है, जो जनांकिकीय अपघटन एंव जैविक असंतुलन की भावना को प्रकट करता है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण जनसंख्या में लिंगानुपात 837 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष पाया जाता है। जिले के अन्तर्गत इकाई स्तर पर लिंगानुपात में क्षेत्रीय विविधता आंकलित की गयी है (सारणी 1 मानचित्र 1द)।

सारणी 1 एवं मानचित्र 1 द से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिक ग्रामीण लिंगानुपात अम्बाह एवं पोरसा विकासखण्डों में क्रमशः 861 एवं 884 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष पाया जाता है। इसके विपरीत जिले में निम्नत्तम ग्रामीण लिंगानुपात पहाडगढ़ विकासखण्ड में 798 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत मध्यम ग्रामीण लिंगानुपात सबलगढ़ एवं कैलारस विकासखण्डों में क्रमशः 831 एवं 837 महिलाएँ प्रति हजार पुरूष पाया जाता है। जिले में निम्न ग्रामीण लिंगानुपात मुरैना एवं जौरा विकासखण्डों में क्रमशः 816 एवं 829 महिलाएँ प्रति सहस्त्र पुरूष पाया जाता है, जो क्षेत्रीय भौतिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता का परिणाम है।

ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति जनसंख्या

अनुसूचित जाति एवं जनजातीय जनसंख्या क्षेत्रीय पिछडेपन एवं सांस्कृतिक विरासत एवं प्राचीन परम्पराओं के प्रतीक के रूप में भी देखी जा सकती हैं। क्षेत्रीय विकास, नियोजन एवं सामाजिक आर्थिक प्रगति एवं इन जातियों के विकास के कार्यक्रमों की दृष्टि से इनकी जनसंख्या का अध्ययन आवश्यक है। अध्ययन क्षेत्र में 19 अनुसूचित जातियाँ एवं 2 जनजातियाँ जिनमें शहरिया प्रमुख है, आंकलित की गयी है। वर्तमान में यहाँ 459456 अनुसूचित जाति एवं 20702 अनुसूचित जनजाति जनसंख्या आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति व्यक्ति कुल जनसंख्या में क्रमशः 21.53 एवं 0.97% पाये जाते हैं। यहाँ क्षेत्रीय स्तर पर ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या में इनकी जनसंख्या में विविधता आंकलित की गयी है। यहाँ इनकी ग्रामीण जनसंख्या का अध्ययन किया गया है।

ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या

मुरैना जिले के अन्तर्गत ग्रामीण अनुसूचित जनसंख्या 335733 व्यक्ति आंकलित की गयी है जो जिले की कुल ग्रामीण जनसंख्या का 22.02% एवं जिले की कुल अनुसूचित जाति जनसंख्या का 73.07% आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र के पूर्वी भाग में अनुसूचित जाति जनसंख्या अधिक एवं मध्य भाग में कम और पश्चिमी भाग में सामान्य आंकलित की गयी है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में इनकी जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप विविध स्तरीय पाया जाता है (सारणी 2 मानचित्र 2 अ)।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सारणी 4.2

मुरैना जिले में ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का क्षेत्रीय स्वरूप 2015

विकास खण्ड	अ.जा.जनसंख्या	जनसंख्या का %	अ.ज.जा. जनसंख्या	जनसंख्या का %
पोरसा	49135	24	102	0.05
अम्बाह	58108	25.6	191	0.084
मुरैना	70515	24.42	475	0.16
जौरा	47172	18.7	1512	0.6
पहाडगढ़	31570	17.2	7981	4.35
कैलारस	35273	19.45	3610	1.99
सबलगढ़	43960	23.48	3545	1.89
जिला	335733	22.02	17416	1.14

स्रोत– क्षेत्रीय सर्वेक्षण

सारणी 2 एवं मानचित्र 2 अ से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिक ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या अम्बाह विकासखण्ड में इसकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का क्रमशः 25.6% आंकलित की गयी है, इसके विपरीत निम्नत्तम ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या पहाडगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का 17.2% आंकलित की गयी है। यहाँ मध्यम ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या सबलगढ़, पोरसा एवं मुरैना विकासखण्डों में इनकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का क्रमशः 23.48, 24 एवं 24.42% आंकलित की गयी है। जिले में इनकी निम्न ग्रामीण जनसंख्या जौरा एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का क्रमशः 18.7 एवं 19.45% आंकलित की गयी है।

ग्रामीण अनुसूचित जाति एवं जनजाति जनसंख्या का क्षेत्रीय स्वरूप, जिला मुरैना 2015

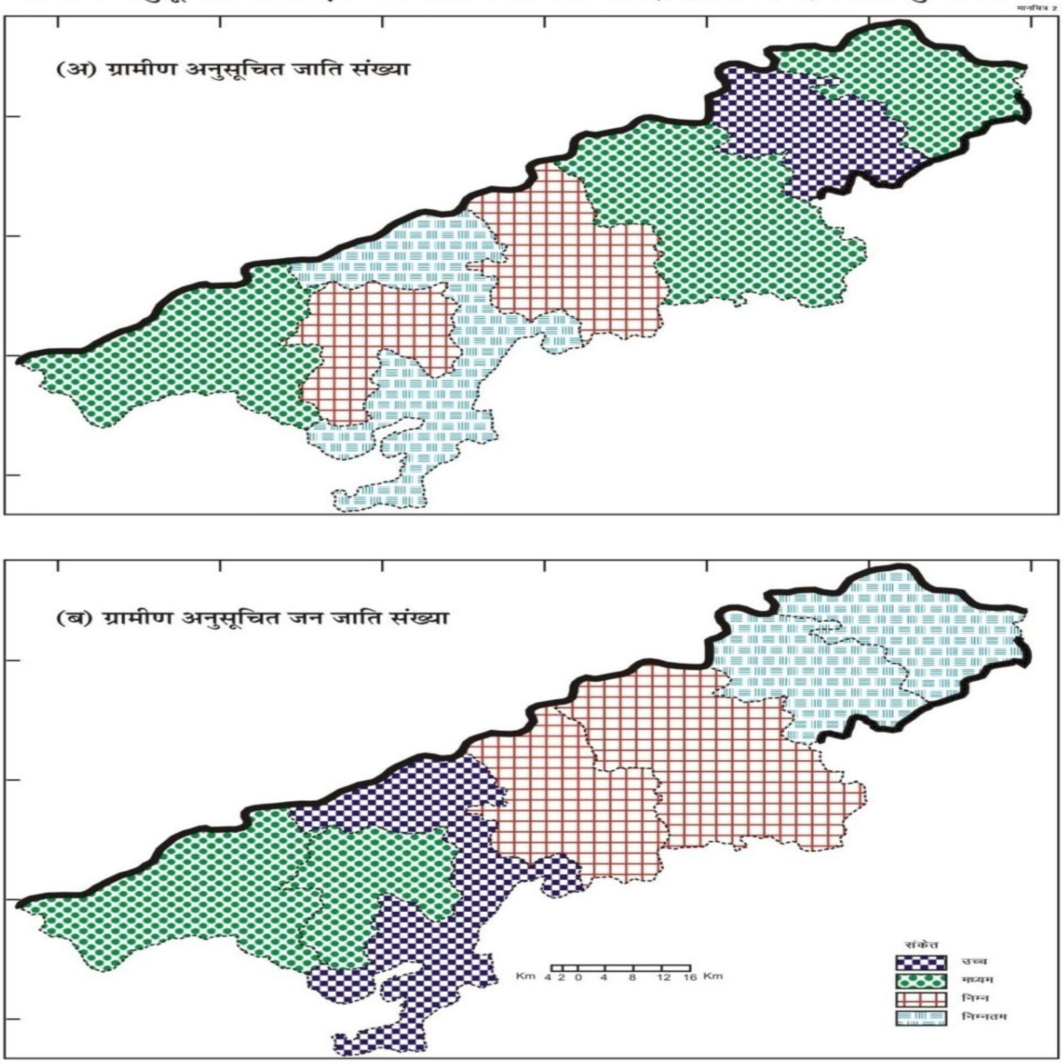

ग्रामीण अनुसूचित जनजाति जनसंख्या

अनुसूचित जनजातियाँ अपने पारम्परिक जीवन शैली एवं आवास व प्राचीन संस्कृति की प्रतीक है। अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा, परिवहन संचार साधनों और बढ़ते मेलमिलाप के कारण इनकी संख्या एवं व्यवहार में परिवर्तन हुए है। इनके क्षेत्रीय विकास को सुदृढ़ एवं जीवनयापन के संसाधन, जीवनशैली में सुधार व रोजगार अवसरों की वृद्धि के लिए इनकी गणना आवश्यक है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत 17416 अनुसूचित जनजाति ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है जो जिले की कुल जनसंख्या का 1.14% एवं जिले की कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का 84.13% आंकलित की गयी है। यहाँ क्षेत्रीय इकाई स्तर पर इनकी ग्रामीण जनसंख्या में विविधता आंकलित की गयी है (सारणी 2 मानचित्र 2ब)।

निष्कर्ष

सारणी 2 एवं मानचित्र 2ब से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में अधिक ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या पहाडगढ़ विकासखण्ड में इसकी कुल ग्रामीण जनसंख्या 4.35% आंकलित की गयी है। इसके विपरीत निम्नत्तम ग्रामीण अनुसूचित जाति जनसंख्या पोरसा एवं अम्बाह विकासखण्डों में इनकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का क्रमशः 0.05 एवं 0.084% आंकलित की गयी है। अध्ययन क्षेत्र में मध्यम ग्रामीण अनुसूचित जनजाति जनसंख्या सबलगढ़ एवं कैलारस विकासखण्डों में इनकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का क्रमशः 1.89 एवं 1.99% आंकलित की गयी है। यहाँ निम्न अनुसूचित जनजाति जनसंख्या मुरैना एवं जौरा विकासखण्डों में इनकी कुल ग्रामीण जनसंख्या का क्रमशः 0.16 एवं 0.6% आंकलित की गयी है।

संदर्भ

शैल, के. सि. (1978)'' उत्तर प्रदेश के परिश्चमतराई क्षेत्र जनसंख्या एवं अधिवास भूगोल का अध्ययन'' अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध ।

कनौजिया, ह.न. (1980)'' भिण्ड जिले की जनसंख्या एक भौगोलिक विश्लेषण'' अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंन्ध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर

Kalgaonakar, R.S. (1981) "The schedule caste population of M.P. A spatial Analysis" Unpublished Ph.D. Thesis Jiwaji University Gwalior

Sharma., R.K. (1980) Sindh basin A study in population geography unpulishad Ph.D Thesis jiwaji University Gwalior

Sharma G. (1987) "Pressure of population on the agriculture recourses of the sagar damoh Plateue unpublished Ph.D thesis sagar.

गुप्ता, अंजू (1988) मध्यप्रदेश की जनसंख्या में लिंगानुपात संरचना एक स्थानिक विश्लेषण'' अप्रकाशित पी. एच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर ।

शर्मा, अशोक कुमार (1990)'' चम्बल संभाग म.प्र. सुविधाओं एवं शिशु किशोर जनसंख्या एक भौगोलिक अध्ययन'' अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर

सोनी एस.(1994)'' भिण्ड जिले की जनसंख्या का विवरण'' अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंधक जीवाजी वि. वि. ग्वलियर

श्रीवास्तव, अ.मो. (1997)'' ग्वालियर जिले की जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।

तोमर, श्यामसुन्दर सिह (1997)'' मुरैना जिले की जनसंख्या एक भौगोलिक अध्ययन'' अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।

उपाध्याय, धनंजय (2000)'' जिला मुरेना की अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव एक भौगोलिक विश्लेषण'' अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।

आजाद, गीता (2007)'' वृहत्तर ग्वालियर में जनसंख्या वृद्धि का पर्यावरण पर प्रभाव, एक भौगोलिक परिप्रेक्ष्य'' अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।

चौहान, कु. पूजा (2007)'' शिवपुरी जिला का जनसंख्या प्रतिरूप, एक भौगोलिक विश्लेषण'' अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।

वर्मा, मूलचन्द्र (2010)'' ग्वालियर सम्भाग में जनसंख्या का एक भौगोलिक अध्ययन'' अप्रकाशित पीएच.डी. शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर ।

पठान, बी.के. (2013)'' अनुसूचित जाति महिलाओं का समाजार्थिक स्तर जिला मुरैना एक भौगोलिक विश्लेषण'' अप्रकाशित पीएच.डी शोध प्रबंध जीवाजी वि.वि. ग्वालियर।